بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 01

राह-ए-ईमान

जनवरी
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 29.12.2023).....8
8. मेरे आने के दो उद्देश्य हैं (मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम).....12
9. शादी ब्याह और रिश्तों के बारे में ज़रूरी बातें.....17
10. अरबईन नम्बर-4.....24
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

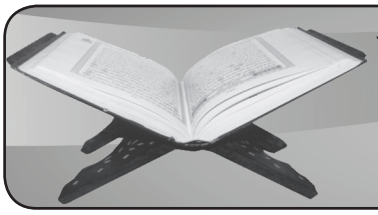

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَلَقَدْ جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ۡ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ۝

अनुवाद:- इस कारण हम ने बनी-इस्राईल के लिए ज़रूरी कर दिया था कि (वे सावधान रहें) जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को सिवाय इस के जिस ने किसी दूसरे व्यक्ति की हत्या की हो अथवा देश में फ़साद फैलाया हो मार दे तो मानो उस ने सारे लोगों की हत्या कर दी और जो उसे बचाए तो मानो उस ने सारे मानव-समाज को बचाया और निस्सन्देह हमारे रसूल उन के पास खुले-खुले चमत्कार लेकर आए थे फिर भी उन में से बहुत से लोग देश में अत्याचार करते जा रहे हैं।

(अल माइदा : 33)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत जाबिर बिन असवद या असवद बिन जाबिर बताते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में दो आदमी यह समझते हुए कि मस्जिद में नमाज़ जमाअत के साथ हो चुकी होगी घर में नमाज़ पढ़ी और फिर मस्जिद में आए और देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ा रहे हैं। वे नमाज़ में शामिल होने के बजाय एक तरफ होकर बैठ गए कि एक बार तो वह नमाज़ पढ़ चुके हैं फिर दोबारा वही नमाज़ पढ़ना सही नहीं। जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने सलाम फेरने के बाद उन्हें देखा कि वह नमाज़ में शामिल नहीं हुए हैं तो वे दोनों डर के मारे कांपते हुए आए कि शायद उनसे कोई गुनाह हो गया है। हुज़ूर ने उनसे नमाज़ न पढ़ने की वजह पूछी। उन्होंने जब सारी बात बताई तो आपने फरमाया- जब अकेले नमाज़ पढ़ चुके हो तो फिर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ लिया करो चाहे तुम पहले अदा की हुई नमाज़ को ही फर्ज़ ही क्यों न समझते हो।

(मसनद अल्इमाम अल्आज़ म कि ताबुस्सलात पृष्ठ 82)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

मुत्तक़ी के लिए कठिनाइयाँ उन्नति का कारण होती हैं

और जो लोग पशुओं जैसी ज़िंदगी व्यतीत करते हैं। अल्लाह ताला जब उनको पकड़ता है तो फिर जान लेने ही के लिए पकड़ता है। परंतु मोमिन के साथ उसका यह बर्ताव नहीं है। उनके कष्टों का परिणाम अच्छा होता है और आख़िरकार अच्छा अंजाम मुत्तक़ी के लिए ही है जैसा कि फ़रमाया-وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّکَ لِلْمُتَّقِيْنَ (अलज़्ज़ुख़रुफ़ 36) उनको जो कष्ट और परेशानियाँ आती हैं वह भी उनके लिए उन्नतियों का कारण बनते हैं ताकि उनको तजुर्बा हो जाए। अल्लाह ताला फिर उनके दिन फेर देता है और ये क़ायदे की बात है कि जिस व्यक्ति के शिकंजे में फसने के दिन आ जाते हैं उस पर पशुओं वाली ज़िंदगी का असर नहीं रहता। उस पर एक मौत ज़रूर आ जाती है और ख़ुदा की पहचान के बाद वह आनंद और शौक जो पशुओं जैसे जीवन में मालूम होते थे नहीं रहते, बल्कि उनमें कड़वाहट और घिन महसूस होती है और नेकियों की तरफ़ ध्यान देना एक सामान्य आदत हो जाती है पहले जो नेकियों के काम करने में तबीयत पर बोझ और सख़्ती होती थी वह नहीं रहती।

अत: याद रखो जब तक नफ़सानी जोशों (तामसिक भावनाओं) से मिली हुई मुरादें होती हैं उस समय तक ख़ुदा उनको किसी मसलिहत से अलग रखता है और जब खुद को बदल लेता है तो फिर वह हालत नहीं रहती। इस बात को कभी मत भूलो कि "दुनिया रोज़े चंद आख़िर कार बा-ख़ुदा वंद (अर्थात यह दुनिया केवल कुछ दिन की है और इसके बाद हमें खुदा तआला से मुलाकात करनी है)। इतना ही काम नहीं कि खा पी लिया और पशुओं की तरह ज़िंदगी गुज़ार ली। इन्सान बहुत बड़ी ज़िम्मेदारियाँ लेकर आता है। इसलिए आख़िरत (परलोक) की फ़िक्र करनी चाहिए और उसकी तैयारी ज़रूरी है। इस तैयारी में जो कठिनाइयाँ आती हैं उनको ग़म और तकलीफ़ के रंग में न समझो बल्कि (ये) अल्लाह ताला उन पर भेजता है जिनको दोनों जन्नतों का मज़ा चखाना चाहता है وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ (अलरहमान: 47) मुसीबतें उन आरिज़ी उमूर (अस्थाई रुकावटों) को दूर करने के लिए आती हैं जो दुख के रंग में हैं। मौलवी रोमी ने किया अच्छा कहा है।

عشق اوّل سرکش و خُونی بود ----- تا گریزد ہر کہ بیرونی بود

अर्थात- आरंभ में इश्क बहुत मूँह ज़ोर और खूंखार होता है ताकि वह व्यक्ति जो केवल तमाशा समझ रहा है भाग जाए। अर्थात खुदा से इश्क करने वाले मुश्किलों से आज़माए जाते हैं (अनुवादक) सय्यद अबदुल क़ादिर जीलानी भी एक स्थान पर लिखते हैं कि जब मोमिन, मोमिन बनना चाहता है तो निश्चित है कि उस पर दुख और इबतिला (आज़माइशें) आएं और वह यहां तक आती हैं कि वह अपने आप को मौत के क़रीब समझता है और फिर जब इस हालत तक पहुंच जाता है तो खुदा की रहमत जोश में आती है। (मल्फूज़ात जिल्द-3)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब"

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

तीसरे प्रश्न का उत्तर...

अत: इब्तिला और इस्तिफ़ा की दुआ की स्वीकारिता में परस्पर अन्तर यह है कि जो इब्तिला के तौर पर दुआ स्वीकार होती है उसमें संयमी और ख़ुदा का दोस्त होना शर्त नहीं और न उसमें यह आवश्यकता है कि ख़ुदा तआला दुआ को स्वीकार करके अपने विशेष वार्तालाप के द्वारा उसकी स्वीकारिता से सूचना भी दे और न वे दुआएं ऐसी उच्चतम श्रेणी की होती हैं जिनका स्वीकार होना एक विचित्र और विलक्षण बात समझी जा सके परन्तु जो दुआएं इस्तिफ़ा के कारण स्वीकार होती हैं उनमें ये निशान स्पष्ट होते हैं:-

(1) प्रथम यह कि दुआ करने वाला एक संयमी, ईमानदार और कामिल मनुष्य होता है।

(2) दूसरे यह कि ख़ुदा तआला के वार्तालाप के माध्यम से उस दुआ की स्वीकृति की उसको सूचना दी जाती है।

(3) तीसरी यह कि अधिकतर वे दुआएं जो स्वीकार की जाती हैं अत्यन्त उच्चतम श्रेणी की तथा पेचीदा कामों के बारे में होती हैं जिनके स्वीकार होने से खुल जाता है कि यह मनुष्य का काम और यत्न नहीं अपितु ख़ुदा तआला की क़ुदरत का एक विशेष नमूना है जो विशेष बन्दों पर प्रकट होता है।

(4) चौथी यह कि इब्तिलाई दुआएं तो कभी-कभी बहुत ही कम बल्कि न के बराबर स्वीकार होती हैं परन्तु इस्तिफ़ाई दुआएं प्रचुरता से स्वीकार होती हैं कभी इस्तिफ़ाई दुआ वाला ऐसी बड़ी-बड़ी कठिनाइयों में फँस जाता है कि यदि कोई अन्य व्यक्ति उनमें ग्रस्त हो जाता तो आत्महत्या के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय अपने प्राण बचाने के लिए उसे कदापि दिखाई न देता। और ऐसा होता भी है कि जब कभी दुनिया परस्त लोग जो ख़ुदा तआला से अलग और दूर हैं कुछ बड़े-बड़े दुखों, ग़मों, रोगों, बीमारियों और हल न होने वाली बलाओं में ग्रस्त हो जाते हैं तो वे अन्तत: ईमान की कमज़ोरी के कारण ख़ुदा तआला से निराश होकर कोई ज़हर खा लेते हैं या कुएं में गिर जाते हैं या बंदूक इत्यादि से आत्महत्या कर लेते हैं परन्तु ऐसे नाज़ुक समयों में इस्तिफ़ा वाला व्यक्ति अपनी ईमानी शक्ति और ख़ुदा तआला से विशेष संबंध के कारण अत्यन्त विचित्र से विचित्र सहायता दिया जाता है और ख़ुदा तआला की अनुकम्पा एक अद्भुत तौर से उसका हाथ पकड़ लेती है, यहाँ तक कि एक मुहरम-ए-राज़ (भेदों

को जानने वाले) का दिल सहसा बोल उठता है कि यह व्यक्ति अल्लाह तआला से सहायता प्राप्त है।

(5) पांचवे यह कि इस्तिफ़ाई दुआ वाला व्यक्ति ख़ुदा तआला की अनुकम्पाओं का पात्र होता है और ख़ुदा तआला समस्त कामों में उसका संरक्षक हो जाता है और ख़ुदा तआला के इश्क का प्रकाश और सच्ची प्रतिष्ठा की मस्ती और रूहानी आनन्द प्राप्ति तथा नेमतों के लक्षण उसके चेहरे में स्पष्ट होते हैं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है...

★ دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ۝

(अलबक़र: - 187)

अब जानना चाहिए कि प्रिय होना, स्वीकारिता और सच्ची विलायत की श्रेणी जिसके संक्षिप्त तौर पर कुछ निशान वर्णन कर चुका हूँ। यह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के बिना कदापि प्राप्त नहीं हो सकता और सच्चे अनुयायी के मुक़ाबले पर यदि कोई ईसाई या आर्य या यहूदी स्वीकारिता के लक्षण और प्रकाश दिखाना चाहे तो यह उसके लिए कदापि संभव न होगा। और परीक्षा का बहुत ही साफ़ तरीका यह है कि यदि एक नेक मुसलमान जो कि सच्चा मुसलमान हो और निष्ठापूर्वक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुयायी हो, उसके मुक़ाबले पर यदि कोई दूसरा व्यक्ति ईसाई आदि मुकाबले के लिए खड़ा हो और यह कहे की तुझ पर आकाश से जो कोई निशान प्रकट होगा या जितने ग़ैबी रहस्य तुझ पर खुलेंगे, या जो कुछ दुआ की स्वीकारिता से तुझ को सहायता दी जाएगी, या जिस प्रकार से तेरे सम्मान और प्रतिष्ठा के इज़हार के लिए क़ुदरत का कोई नमूना प्रकट किया जायेगा, या अगर विशेष इनामों का बतौर भविष्यवाणी तुझे वादा दिया जायेगा अथवा तेरे किसी दुष्ट विरोधी पर किसी चेतावनी के उतरने की खबर दी जाएगी तो इन सब बातों में जो कुछ तेरे द्वारा प्रकट किया जाएगा और जो कुछ तू दिखायेगा वह मैं भी दिखाऊंगा। तो ऐसा मुकाबला किसी विरोधी से कदापि संभव नहीं और वे कदापि मुकाबले पर नहीं आएंगे क्योंकि उनके हृदय गवाही दे रहे हैं कि वे महाझूठे हैं। उन्हें उस सच्चे ख़ुदा से कुछ भी संबंध नहीं कि जो ईमानदारों का सहायक और सिद्दीकों का दोस्त है जैसा कि हम पहले भी कुछ वर्णन कर चुके हैं।

وَهٰذَا اٰخِرُ كَلَامِنَا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ اَوَّلًا وَّ اٰخِرًا وَّ ظَاهِرًا وَّ بَاطِنًا۔ هُوَ مَوْلَانَا نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ الْوَكِيْل۔

(एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 69-73)

★ ★ ★

सम्पादकीय

शुहदा-ए-अहमदियत

प्रिय पाठको! मजलिस खुद्दामुल अहमदिया भारत के इजतेमाओं के लिए इस वर्ष हुज़ूर अनवर ने जो थीम मजलिस को दी है वह है "शुहदा-ए-अहमदियत।" इस थीम के साथ हुज़ूर ने खुद्दाम को यह हिदायत फरमाई: अत: हमारी कोशिश होनी चाहिए कि इन वाक़ियात ने जो जमाअती क़ुर्बानी की सूरत में हुए, जिस तरह पहले से बढ़कर हमें ख़ुदा तआला की तरफ़ राग़िब किया है, इस जज़्बे को, इस ईमानी जोश को, अल्लाह तआला के हुज़ूर अपने रोने गिड़गिड़ाने को, अपने अंदर पाक तबदीलियों की कोशिशों को कभी कमज़ोर न होने दें, कभी कमज़ोर न होने दें, कभी अपने भाइयों की क़ुर्बानी को मरने न दें जो अपनी जान की क़ुर्बानियां देकर हमें ज़िंदगी के नए रास्ते दिखा गए।

साथियो ! जमाअत अहमदिया में अल्लाह तआला की राह में जान की जो क़ुर्बानियां पेश की जा रही हैं उनमें सबसे अज़ीमुश्शान क़ुर्बानी तो वह है जो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब ने पेश की। उस मौक़ा पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"जब मैं इस इस्तिक़ामत और जाँ-फ़िशानी को देखता हूँ जो साहिबज़ादा मौलवी मुहम्मद अब्दुल लतीफ़ मरहूम ने दिखाई तो मुझे अपनी जमाअत के बारे में बहुत उम्मीद बढ़ जाती है क्योंकि जिस ख़ुदा ने इस जमाअत के कुछ लोगों को ये तौफ़ीक़ दी कि न सिर्फ माल बल्कि जान भी इस राह में क़ुर्बान कर गए उस ख़ुदा की साफ तौर पर ये इच्छा मालूम होती है कि वह बहुत से ऐसे लोग इस जमाअत में पैदा करे जो साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ की रूह रखते हों और उनकी रूहानियत का एक नया पौधा हों।"

(तज़्किरतुश्शहातैन, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 20 पृष्ठ 75)

हुज़ूर अनवर फरमाते हैं: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को फ़िक्र थी कि पता नहीं मेरे बाद क्या हो। हम गवाही देते हैं कि आपके बाद भी ऐसे लोग पैदा हुए और हो रहे हैं जिन्होंने दुनिया के लालचों की परवाह नहीं की और अपनी जानें भी क़ुर्बान करने से पीछे नहीं हटे। बाप ने बेटे को अपने सामने शहीद होते देखा और बेटे ने बाप को अपने सामने शहीद होते देखा लेकिन उनके पैर नहीं लड़खड़ाए और फिर ख़ुद भी जान क़ुर्बान कर दी। 28 मई 2010 को जब नमाज़-ए-जुमा के वक़्त जमाअत की दो मस्जिदों में हमारे प्यारे अहमदियों को शहीद किया गया था उस वक़्त मैंने हर घर में फ़ोन किया तो बच्चों, बीवियों, भाइयों, माओं और बापों को अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी पाया। उनके मज़बूत इरादों भरी आवाज़ों में ये पैग़ाम साफ़ सुनाई दे रहा था कि हम अल्लाह तआला की रज़ा पर ख़ुश हैं। ये एक-एक, दो-दो क़ुर्बानियां क्या चीज़ हैं हम तो अपना सब कुछ और अपने ख़ून का हर क़तरा मसीह मौऊद की जमाअत के लिए क़ुर्बान करने को तैयार हैं। यह उस ईमान की वजह से है जो ज़माने के इमाम को मानने से हमारे अंदर पैदा हुआ।

अल्लाह तआला हमें तौफीक दे कि हम खुदा की राह में जान की कुर्बानी देने से कभी पीछे हटने वाले न हों और हमें चाहिए कि अपने शहीदों के जज़्बे को हमेशा अपने दिलों मे ज़िन्दा रखें। **संपादक**

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

नुसरते इलाही[1]

ख़ुदा के पाक[2] लोगों को ख़ुदा से नुसरत आती है
जब आती है तो फिर आलम[3] को इक आलम दिखाती है
वो बनती है हवा और हर खसे[4] राह को उड़ाती है
वो हो जाती है आग और हर मुख़ालिफ़[5] को जलाती है
कभी वो ख़ाक[6] हो कर दुश्मनों के सर पे पड़ती है
कभी हो कर वो पानी उन पे इक तूफ़ान लाती है
ग़र्ज़ रुकते नहीं हरगिज़ ख़ुदा के काम बन्दों से
भला ख़ालिक़[7] के आगे ख़ल्क़ की कुछ पेश जाती है
(बराहीन अहमदिया, भाग 2, पृ. 114, रूहानी ख़ज़ायन भाग 1, पृ. 106)

दावते फ़िक्र

यारो ख़ुदी[8] से बाज़[9] भी आओगे या नहीं ?
ख़ूं[10] अपनी पाक साफ़ बनाओगे या नहीं ?
बातिल[11] से मैल दिल की हटाओगे या नहीं ?
हक़ की ताफ़ रुजूअ[12] भी लाओगे या नहीं ?
कब तक रहोगे ज़िद्दो तअस्सुब[13] में डूबते ?
आख़िर क़दम ब-सिदक उठाओगे या नहीं ?
क्यों कर करोगे रद्द जो मुहक्क़क़[14] है एक बात?
कुछ होश करके उज़र[15] सुनाओगे या नही?
सच सच कहो, अगर न बना तुम से कुछ जवाब?
फिर भी ये मुँह जहाँ[16] को दिखाओगे या नहीं?
(बराहीन अहमदिया, भाग 2 पृ. 139, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 1, पृ. 57)

---

1. ख़ुदा की सहायता। 2. पवित्र। 3. संसार। 4. राह की बाधाएं। 5. विरोधी। 6. मिट्टी। 7. सृजनकर्ता। 8. अहंकार। 9. रुक जाना। 10. आदत। 11. झूठ। 12. लौटना। 13. ईर्ष्या-द्वेष। 14. प्रमाणित। 15. बहाना। 16.संसार।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 29.12.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

ओहद की लड़ाई में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले रह गए, इसमें यही भेद था कि आप स. की दिलेरी लोगों पर प्रकट हो। (हज़रत मसीह मौऊद अलै.)

जंगे ओहद के युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज भी ओहद के युद्ध की कुछ अन्य घटनाएँ बयान करूँगा। जैसा कि वर्णन चल रहा था, एक छोटा सा रास्ता खाली करने के कारण काफ़िरों ने पीछे से हमला किया तथा युद्ध की बिसाट उलट गई। दुशमन का हमला अत्यंत भयावह था। उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दृढ़ संकल्प, साहस एवं शौर्य के नमूने के बारे में लिखा है कि जब लड़ाई का पांसा पलटने के बाद सहाबा घबराहट में अपने आपको संभाल न सके और तितर बितर हो गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस आपाधापी तथा अपने चारों ओर दुशमनों के जमघटे के बावजूद अपने स्थान पर जमे रहे। सहाबा रज़ी. को घबराहट में इधर उधर भागते देख कर उन्हें पुकारते हुए फ़रमाते जाते थे कि ऐ फ़लाँ! मेरी तरफ़ आओ, मेरी ओर आओ, मैं ख़ुदा का रसूल हूँ, जबकि हर तरफ़ से आप स. पर तीरों की बोछार हो रही थी।

एक रिवायत में है कि आप स. बुलन्द आवाज़ में फ़रमा रहे थे कि-

اَنَا النَّبِیُّ لَا کَذِبْ اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ اَنَا ابْنُ الْعَوَاتِكْ۔

मैं नबी हूँ इसमें झूठ नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ, मैं अवातिक अर्थात आतिकाओं का बेटा हूँ।

साधारणतः यह है कि ये शब्द आप स. ने हुनैन के युद्ध में फ़रमाए थे परन्तु यह संभव है कि यही शब्द आप स. ने ओहद के युद्ध में भी फ़रमाए हों। अवातिक, आतिका का बहुवचन है तथा

आतिका नाम की एक से अधिक महिलाएँ थीं जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नानियाँ और दादियाँ थीं।

इस घटना का विवरण बयान करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सीरत खातमुन्नबिय्यीन स. में लिखा है कि जब अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ी. के साथियों ने देखा कि अब तो विजय हो चुकी है तो उन्होंने अपने अमीर अब्दुल्लाह रज़ी. से कहा कि हमको भी आज्ञा दें कि हम भी सेना के साथ शामिल हो जाएँ। अब्दुल्लाह ने उन्हें रोका, किन्तु ये लोग यह कहते हुए नीचे उतर गए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का केवल यह अभिप्राय: था कि जब तक पूर्णत: संतुष्टि न हो तो वह छोटा एवं सकरा रास्ता खाली न छोड़ा जावे। खालिद बिन वलीद ने दर्रे की तरफ़ मैदान साफ़ पाया जिस पर उसने अपने सवारों तथा इकरिमा बिन अबू जहल के दस्ते को लेकर अब्दुल्लाह बिन जुबैर तथा उनके कुछ साथियों को क्षण भर में शहीद करके इस्लामी सेना के पीछे से हमला कर दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो एक बुलन्द स्थान पर खड़े ये सब दृश्य देख रहे थे, मुसलमानों को निरन्तर पुकारते रहे किन्तु इस हंगामे में आप स. की आवाज़ दब कर रह जाती थी।

मुसलमान इस अचानक हमले से घबरा गए, यहाँ तक कि इस आपाधापी में एक दूसरे पर वार करने लगे तथा अपने पराए में अन्तर न रहा। हुज़ैफ़ा रज़ी. के पिता जी जिनका नाम यमान था, ग़लती से शहीद कर दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाद में मुसलमानों की ओर से यमान की हत्या का बदला धन देकर चुकाना चाहा परन्तु हुज़ैफ़ा रज़ी. ने लेने से इंकार कर दिया और कहा कि मैं अपने बाप की हत्या मुसलमानों को माफ़ करता हूँ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ी. सूर: नूर की आयत 64 की तफ़सीर में इसके विषय में फ़रमाते हैं कि जो लोग इस रसूल स. के आदेश का विरोध करते हैं उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि कहीं उनको ख़ुदा तआला की ओर से कोई संकट न पहुंच जाए। अतएव देख लो कि ओहद की लड़ाई में इसी आदेश की अवहेलना के कारण इस्लाम की सेना को कितनी हानि उठानी पड़ी। काफ़िरों पर विजय के बाद एक अस्थाई पराज्य की चोट इस कारण से लगी कि कुछ आदमियों ने आप स. के एक आदेश की अवहेलना की थी और आप स. के निर्देश के विरुद्ध अपनी बुद्धि से काम लेना शुरु कर दिया था। यदि वे लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे उसी प्रकार चलते जिस प्रकार नाड़ी हृदय की गति के पीछे चलती है, यदि वे समझते कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन के फ़लस्वरूप यदि पूरी दुनिया को भी अपने प्राणों का बलिदान करना पड़ता है कि वह एक तुच्छ वस्तु है, यदि वे व्यक्तिगत बुद्धि से काम लेकर इस पहाड़ी सकरे रास्ते को न छोड़ते तो न दुशमन को दोबारा हमले का अवसर मिलता तथा न ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा को कोई कष्ट पहुंचता। अत: अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुमने आज्ञा पालन न किया तो हानि उठाई, यह इसका परिणाम था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने सूर: कौसर की

तफ़सीर में भी इस घटना को विस्तार से बयान फ़रमाया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दृढ़ संकल्प के बारे में मिक़दाद बिन उमरू रज़ी. ने ओहद के दिन का वर्णन करते हुए बयान किया कि अल्लाह की क़सम, मुशरिकों ने मुसलमानों का वध किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अनेक घाव पहुंचाए, सुन लो उस ज़ात की क़सम जिसने आप स. को हक़ के साथ भेजा है, आप स. एक बालिश्त भी पीछे नहीं हटे तथा वे शत्रु के सामने डटे रहे। एक रिवायत में यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने स्थान पर जमे रहे तथा दुशमन से डटकर मुक़ाबला करते रहे तथा अपनी कमान से उन पर तीर बरसाते रहे यहाँ तक कि तीर समाप्त हो गए तो कमान क़तादा बिन नोमान ने ले ली तथा वह कमान सदैव उनके पास रही।

नाफ़े बिन जुबैर रज़ी. बयान करते हैं कि मैंने मुहाजिरों में से एक व्यक्ति को यह कहते हुए सुना कि ओहद में हर एक दिशा से तीर आ रहे हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच में हैं, सारे तीर आप स. से दूर हो जाते थे। अब्दुल्लाह बिन शहाब ज़ोहरी ने कहा कि आप स. हमसे सुरक्षित कर दिए गए। अल्लाह की क़सम! हम चार लोग मक्का से निकले थे तथा उनकी हत्या करने का संकल्प एवं निश्चय किया परन्तु हम उन तक नहीं पहुंच सके।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मक्की ज़िन्दगी एक अद्भुत नमूना है। एक दृष्टि से पूरा जीवन ही कष्टों में व्यतीत हुआ। ओहद की लड़ाई में आप स. अकेले ही थे, ऐसे दुशमनों में घिरे हुए थे, तब भी आप ने यह नहीं छिपाया कि मैं नहीं हूँ बल्कि इसका ऐलान कर दिया, पता लग गया लोगों को। ओहद के युद्ध में आप स. अकेले रह गए, इसमें यह भेद था कि आप स. का शौर्य लोगों पर प्रकट हो, जबकि आप स. दस हज़ार के मुक़ाबले में अकेले खड़े हो गए कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ। ऐसा नमूना दिखाने का किसी नबी को अवसर नहीं मिला।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ओहद में तो तीन हज़ार की संख्या थी, क्यूँकि लिखने वाले ने लिखा है, हो सकता है कि आप स. ने दो युद्धों के बारे में फ़रमाया हो। अहज़ाब के युद्ध में दस हज़ार काफ़िर सेना थी तथा अन्य स्थानों पर भी दुशमनों की काफ़ी संख्या थी, तो इस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आप स. की बहादुरी और आप स. का नमूना साबित फ़रमा रहे हैं कि काफ़िरों के सामने भी आप स. अकेले खड़े रहे।

फिर आप अलै. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला क़ादिर है कि जिस वस्तु में चाहे शक्ति भर दे। अत: अपने दर्शन वाली शक्ति उसने अपने कलाम में भर दी। नबियों ने इसी कलाम पर तो अपने प्राण लुटा दिए। क्या कोई सांसारिक प्रेमी इस तरह कर सकता है? इस कलाम एवं सम्बोधन के कारण कोई नबी इस मैदान में क़दम रख कर फिर पीछे नहीं हटा तथा न ही कोई नबी विश्वासघाती हुआ, अर्थात जो दावा किया है, दावे पर क़ायम रहते हैं।

ओहद के युद्ध की घटना के बारे में लोगों ने विवेचनाएँ की हैं किन्तु असल बात यह है कि ख़ुदा की उस समय प्रतापी उर्जा थी और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त किसी और में सहन करने की शक्ति नहीं थी, इस लिए आप स. वहाँ पर ही खड़े रहे तथ शेष सहाबियों के क़दम उखड़ गए।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में जैसे इस सत्य एवं निष्ठा जैसा अन्य कोई उदाहरण नहीं मिलता जो आप स. को ख़ुदा से था, ऐसा ही उन इलाही समर्थनों का भी कोई अन्य उदाहरण नहीं मिलता जो आप स. को अल्लाह से प्राप्त हुए थे।

हुज़ूरे अनवर ने ख़ुत्ब: के अन्त में कुछ मृतकों का सद्धर्णन फ़रमाया-

सबसे पहले एक पुराने खादिम एवं सिलसिले के मुबल्लिग़ मुकर्रम डा. जलाल शम्स साहब इन्चार्ज टर्किश डैस्क के देहान्त पर उनका सद्धर्णन करते हुए फ़रमाया कि इनका जनाज़ा कल पढ़ा दिया था, आज इनके बारे में कुछ वर्णन करना चाहता हूँ। यह योग्य, प्रतिभा शाली, सरल स्वभाव एवं आज्ञा पालन करने वाले वा$किफ़े ज़िन्दगी थे। जर्मनी तथा बर्तानिया में आपको सेवाएँ करने का अवसर मिला। २००२ में तुर्की में आपको दो साथियों के साथ तबलीग़ के अपराध में साढ़े चार महीने की जेल का भी सौभाग्य मिला।

हुज़ूरे अनवर ने अन्य तीन मृतकों का सद्धर्णन फ़रमाया तथा उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। इनमें मुकर्रम मुहम्मद इबराहीम भाम्बड़ी साहब का वर्णन फ़रमाया कि उन्होंने १०६ वर्ष की आयु पाई, बड़ा प्यार एवं स्नेह करने वाले थे, मैं भी उनका विद्यार्थी रहा हूँ। उनकी कठोरता में सहानुभूति एवं सुधार की धारणा होती थी।

फिर घाना के युसुफ़ अजारे साहब का वर्णन फ़रमाया कि बड़े निष्ठावान अहमदी दोस्त थे। विभिन्न जमाअती ओहदों पर नियुक्त रहे तथा सेवा का सुअवसर मिला।

फिर दिवंगत अलहाज उसमान बिन आदम साहब का वर्णन किया, मरहूम वसीय्यत के निज़ाम से जुड़े हुए थे तथा अत्यंत निष्ठावान अहमदी थे, हज का सौभाग्य भी मिला तथा क़ुर्आन करीम के फ़ान्टी भाषा के अनुवाद में भी इनकी बड़ी भूमिका है।

हुज़ूरे अनवर ने मरहूमीन को मग़फ़िरत की दुआ देते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला इनकी संतानों को भी इनके पद्चिन्हों पर चलने का सामर्थ्य प्रदान करे।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

मेरे आगमन के दो उद्देश्य हैं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की कलम से

अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं:

"इसके अतिरिक्त यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ख़ुदा तआला एक मुफ़्तरी और झूठे इन्सान को इतनी लम्बी छूट नहीं देता कि वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी बढ़ जाए। मेरी आयु 67 वर्ष की है और मेरे अवतरण के दावे का समय 23 वर्ष से अधिक हो गया है यदि मैं ऐसा ही मुफ़्तरी और कज़्ज़ाब था तो अल्लाह तआला इस मामले को इतना लम्बा न होने देता। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि तुम्हारे आने से क्या लाभ हुआ?

याद रखो मेरे आगमन के दो उद्देश्य हैं। एक यह कि जो विजय इस समय इस्लाम पर अन्य धर्मों की हुई है जैसे वे इस्लाम को खाते जाते हैं और इस्लाम अत्यन्त कमज़ोर और अनाथ बच्चे के समान हो गया है। अत: इस समय ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है ताकि मैं इस्लाम को अपनी मूल आस्थाओं को छोड़ चुके धर्मों के आक्रमणों से बचाऊं और इस्लाम के ज़ोरदार तर्कों तथा सच्चाइयों के प्रमाण प्रस्तुत करूं। और वे प्रमाण ज्ञान संबंधी तर्कों के प्रकाश और आसमानी बरकतें हैं जो हमेशा से इस्लामी समर्थन में प्रकट होते रहे हैं। इस समय यदि तुम पादरियों की रिपोर्टें पढ़ो तो ज्ञात हो जाएगा कि वे इस्लाम के खिलाफ़ क्या कोशिश कर रहे हैं। और उनका एक एक अखबार कितनी संख्या में प्रकाशित होता है। ऐसी हालत में आवश्यक था कि इस्लाम का बोलबाला किया जाता। अत: इस उद्देश्य के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है। और मैं निश्चित तौर पर कहता हूं कि इस्लाम की विजय होकर रहेगी और इसके लक्षण प्रकट हो चुके हैं। हां यह सच्ची बात है कि इस विजय के लिए किसी तलवार और बन्दूक़ की आवश्यकता नहीं और न ख़ुदा तआला ने मुझे हथियारों के साथ भेजा है। जो व्यक्ति इस समय यह सोचे वह इस्लाम का मूर्ख दोस्त होगा। धर्म का उद्देश्य दिलों पर विजय प्राप्त करना होता है और यह उद्देश्य तलवार से प्राप्त नहीं होता। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो तलवार उठाई मैं कई बार प्रकट कर चुका हूं कि वह तलवार केवल आत्मरक्षा और बचाव के तौर पर थी और वह भी उस समय जबकि विरोधियों और इन्कारियों के अत्याचार हद से गुज़र गए थे और असहाय मुसलमानों के ख़ून से पृथ्वी लाल हो चुकी।

अत: मेरे आगमन का उद्देश्य तो यह है कि इस्लाम की विजय दूसरे धर्मों पर हो।

दूसरा कार्य यह है कि जो लोग कहते हैं कि हम नमाज़ पढ़ते हैं और यह करते हैं और वह करते हैं यह केवल मुंह की बातें है। इसके लिए आवश्यकता है कि वह हालत मनुष्य के अन्दर पैदा हो जाए जो इस्लाम का सार और मूल है। मैं तो यह जानता हूं कि कोई व्यक्ति मोमिन और मुसलमान नहीं बन सकता जब तक अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली रिज़्वानुल्लाहु अलैहिम अज्मईन के समान रंग पैदा न हो। वे दुनिया से प्रेम नहीं करते थे अपितु उन्होंने अपने जीवन ख़ुदा तआला के मार्ग में समर्पित किए हुए थे। अब जो कुछ है वह दुनिया के लिए है और दुनिया के लिए इतनी तन्मयता हो रही है कि ख़ुदा तआला के लिए कोई स्थान खाली

नहीं रहने दिया। व्यापार है तो दुनिया के लिए, इमारत है तो दुनिया के लिए अपितु नमाज़ और रोज़ा है तो वह भी दुनिया के लिए। दुनियादारों के सानिध्य के लिए तो सब कुछ किया जाता है परन्तु धर्म का सम्मान कुछ भी नहीं। अब हर व्यक्ति समझ सकता है कि क्या इस्लाम के इक़रार और स्वीकारिता का इतना ही आशय था जो समझ लिया गया है या वह बुलन्द उद्देश्य है? मैं तो यह जानता हूं कि मोमिन पवित्र किया जाता है और उसमें फ़रिश्तों का रंग हो जाता है। जैसे-जैसे अल्लाह तआला का सानिध्य बढ़ता जाता है वह ख़ुदा तआला का कलाम सुनता और उस से तसल्ली पाता है। अब तुम में से प्रत्येक अपने-अपने दिल में सोच ले कि क्या यह पद उसे प्राप्त है? मैं सच-सच कहता हूं कि तुम केवल छाल और छिलके पर सन्तुष्ट हो गए हो हालांकि यह कुछ चीज़ नहीं है ख़ुदा तआला गूदा चाहता है। तो जैसे मेरा यह कार्य है कि उन आक्रमणों को रोका जाए जो बाह्य तौर पर इस्लाम पर होते हैं, वैसे ही मुसलमानों में इस्लाम की वास्तविकता और रूह पैदा की जाए। मैं चाहता हूं कि मुसलमानों के दिलों में ख़ुदा तआला के स्थान पर जो मूर्तियों को श्रेष्ठता दी गई है उसकी आशाओं और उम्मीदों को रखा गया है, मुकद्दमें और सुलह जो कुछ है वह दुनिया के लिए है उस मूर्ति को टुकड़े-टुकड़े किया जाए और अल्लाह तआला की श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा उनके दिलों में क़ायम हो और ईमान रूपी वृक्ष ताज़ा से ताज़ा फल दे। इस समय वृक्ष का रूप है परन्तु वास्तविक वृक्ष नहीं। क्योंकि वास्तविक वृक्ष के लिए तो फ़रमाया -

اَلَمۡ تَرَ کَیۡفَ ضَرَبَ اللّٰہُ مَثَلًا کَلِمَۃً طَیِّبَۃً کَشَجَرَۃٍ طَیِّبَۃٍ اَصۡلُہَا ثَابِتٌ وَّ فَرۡعُہَا فِی السَّمَآءِ ۙ
تُؤۡتِیۡۤ اُکُلَہَا کُلَّ حِیۡنٍۭ بِاِذۡنِ رَبِّہَا (इब्राहीम-25,26)

अर्थात् क्या तूने नहीं देखा कि क्योंकर वर्णन किया अल्लाह तआला ने उदाहरण अर्थात् कामिल धर्म का उदाहरण कि वह पवित्र बात पवित्र वृक्ष के समान है जिसकी जड़ स्थापित हो और जिसकी शाखाएं आकाश में हों और वह हर समय अपना फल अपने परवरदिगार के आदेश से देता है, اصلها ثابت से अभिप्राय यह है कि उसके सिद्धान्त प्रमाणित निश्चित हों और पूर्ण विश्वास के स्तर तक पहुंचे हुए हों और वह हर समय अपना फल देता रहे किसी समय खुश्क वृक्ष के समान न हो। परन्तु बताओ कि क्या अब यह हालत है? बहुत से लोग कह तो देते हैं कि आवश्यकता ही क्या है? इस बीमार की कैसी मूर्खता है जो यह कहे कि वैद्य से निस्पृह है और उसकी आवश्यकता नहीं समझता तो इस का परिणाम उसकी तबाही के अतिरिक्त और क्या होगा? इस समय मुसलमान اَسۡلَمۡنَا (अस्लम्ना) में तो निस्सन्देह दाख़िल है परन्तु اٰمَنَّا के अन्तर्गत नहीं। और यह उस समय होता है कि जब एक प्रकाश साथ हो।

अतः ये वे बातें हैं जिन के लिए मैं भेजा गया हूं इसलिए मेरे मामले में झुठलाने के लिए जल्दी न करो अपितु ख़ुदा तआला से डरो और तौबः करो। क्योंकि तौबः करने वाले की बुद्धि तेज़ होती है। **ताऊन** का निशान बहुत ख़तरनाक निशान है और ख़ुदा तआला ने इस के बारे में मुझ पर जो कलाम उतारा है वह यह है -

اِنَّ اللّٰہَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِہِمۡ (अर्रअद-12)

यह ख़ुदा तआला का कलाम है और उस पर लानत है जो ख़ुदा तआला पर झूठ बांधे। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि मेरे इरादे में उस समय परिवर्तन होगा जब हृदयों में परिवर्तन होगा। इसलिए ख़ुदा तआला से

डरो और उसके प्रकोप से भय करो। कोई किसी का ज़िम्मेदार नहीं हो सकता। किसी पर साधारण मुक़द्दमा हो तो अधिकतर लोग वफ़ा नहीं कर सकते फिर आख़िरत में क्या भरोसा रखते हो जिसके संबंध में फ़रमाया يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ (अबस-35) विरोधियों का तो यह कर्त्तव्य था कि वे सुधारणा से काम लेते और لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ (बनी इस्राईल-37) पर अमल करते परन्तु उन्होंने जल्दबाज़ी से काम लिया। स्मरण रखो पहली क़ौमें इसी प्रकार तबाह हुईं। बुद्धिमान वह है जो विरोध करके भी जब उसे ज्ञात हो कि वह ग़लती पर था उसे त्याग दे। परन्तु यह बात तब प्राप्त होती है कि जब ख़ुदा का भय हो। और असल मर्दों का कार्य यही है कि वह अपनी ग़लती का इक़रार करें। वही पहलवान है और उसी को ख़ुदा तआला पसन्द करता है।

इन समस्त बातों के अतिरिक्त मैं अब **अनुमान** के संबंध में कुछ कहना चाहता हूं कि यद्यपि क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेश मेरे साथ हैं सहाबा[रज़ि.] का इज्मा भी मेरा समर्थन करता है। ख़ुदा के निशान और सहायताएं मेरी सहायक हैं। **समय की आवश्यकता मेरा सच्चा होना प्रकट करती है** परन्तु **अनुमान** के माध्यम से भी प्रमाण पूरा हो सकता है। इसलिए देखना चाहिए कि अनुमान क्या कहता है? मनुष्य कभी किसी ऐसी वस्तु को मानने के लिए तैयार नहीं हो सकता जो अपना उदाहरण न रखती हो। उदाहरणतया यदि एक व्यक्ति आकर कहे कि तुम्हारे बच्चे को हवा उड़ा कर आकाश पर ले गई है या बच्चा कुत्ता बन कर भाग गया है तो क्या तुम उसकी बात को अकारण उचित और बिना छान-बीन मान लोगे? कभी नहीं। इसलिए पवित्र क़ुर्आन ने फ़रमाया है -

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (अन्नहल-44)

अब मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के मामले पर और उन के आकाश पर उड़ जाने के बारे में विचार करो। उन तर्कों से दृष्टि हटाकर जो उनकी मृत्यु के बारे में हैं यह दृढ़ बात है कि काफ़िरों ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आकाश पर चढ़ जाने का चमत्कार मांगा। अब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो हर तरह कामिल और सर्वश्रेष्ठ थे उनको चाहिए था कि वह आकाश पर चढ़ जाते परन्तु उन्होंने अल्लाह तआला की वह्यी से उत्तर दिया -

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (बनी इस्राईल-94)

इसका अर्थ यह है कि कह दो अल्लाह तआला इस बात से पवित्र है कि वह वादे के विरुद्ध करे जबकि उसने मनुष्य के लिए आकाश पर शरीर सहित जाना अवैध कर दिया है परन्तु मैं जाऊं तो झूठा ठहरूंगा। अब यदि तुम्हारी यह आस्था सही है कि मसीह आकाश पर चला गया है और कोई पादरी मुक़ाबले पर यह आयत प्रस्तुत करे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐतराज़ करे तो तुम इस का क्या उत्तर दे सकते हो? तो ऐसी बातों के मानने से क्या लाभ जिन का कोई असल पवित्र क़ुर्आन में मौजूद नहीं। इस प्रकार से तुम इस्लाम को तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बदनाम करने वाले ठहरोगे। फिर पहली किताबों में भी तो कोई उदाहरण मौजूद नहीं और उन किताबों से विवेचन करना अवैध नहीं है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ (अलअह्क़ाफ - 11) और फिर फ़रमाया -

كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ (अर्रअद - 44)

और ऐसा ही फ़रमाया - يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ (अलबक़रह-147) जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत के सिद्ध के लिए उनको प्रस्तुत करता है तो हमारा उन से विवेचन करना क्यों अवैध हो गया?

अब उन्हीं किताबों में एक मलाकी नबी की किताब है जो बाइबल में मौजूद है। इसमें मसीह से पूर्व एलिया के दोबारा आने का वादा किया गया। अंतत: जब मसीह इब्ने मरयम आए तो हज़रत मसीह से इल्यास के दोबारा आने का प्रश्न मलाकी नबी की इस भविष्यवाणी के अनुसार किया गया परन्तु हज़रत मसीह ने यह फ़ैसला किया कि वह आने वाला यूहन्ना के रंग में आ चुका।

अब यह फ़ैसला हज़रत ईसा ही की अदालत से हो चुका है कि दोबारा आने वाले से क्या अभिप्राय होता है। वहां यह्या का नाम इल्यास का मसील (समरूप) नहीं रखा अपितु उन्हें ही एलिया ठहराया गया। अब यह अनुमान भी मेरे साथ है। मैं तो उदाहरण प्रस्तुत करता हूं परन्तु मेरे इन्कारी कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते। कुछ लोग जो इस स्थान पर असमर्थ हो जाते हैं तो कह देते हैं कि ये किताबें अक्षरांतरित और परिवर्तित हैं परन्तु खेद है ये लोग इतना नहीं समझते कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा रज़ि. इस से प्रमाण लेते रहे और अधिकतर बुज़ुर्गों ने अर्थों में अक्षरान्तरण अभिप्राय लिया है। बुख़ारी ने भी यही कहा है। इसके अतिरिक्त यहूदियों और ईसाइयों की जानी दुश्मनी है। किताबें अलग-अलग है वे अब तक मानते हैं कि इल्यास दोबारा आएगा। यदि यह प्रश्न न होता तो हज़रत मसीह को वह स्वीकार न कर लेते? एक यहूदी विद्वान की किताब मेरे पास है। वह बड़े ज़ोर से लिखता है और अपील करता है कि यदि मुझ से यह प्रश्न होगा तो मैं मलाकी नबी की किताब सामने रख दूंगा कि उसमें इल्यास के पुन: आने का वादा किया गया था।

अब विचार करो इन आपत्तियों के बावजूद लाखों यहूदी नारकी हुए और सुअर-बन्दर बने तो क्या मेरे मुक़ाबले में आपत्ति सही होगी कि वहां मसीह इब्ने मरयम का वर्णन है। यहूदी तो असमर्थ हो सकते थे उनमें उदाहरण न था। परन्तु अब तो कोई आपत्ति शेष नहीं। मसीह की मृत्यु पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का देखना उसका सत्यापन करता है और फिर पवित्र क़ुर्आन और हदीस में مِنْكُمْ (मिन्कुम) आया है। फिर ख़ुदा तआला ने मुझे ख़ाली हाथ नहीं भेजा। हज़ारों-लाखों निशान मेरे सत्यापन में प्रकट हुए और अब भी यदि कोई चालीस दिन मेरे पास रहे तो वह निशान देख लेगा। लेखराम का निशान महान निशान है। मूर्ख कहते हैं कि मैंने क़त्ल करा दिया। यदि यह ऐतराज़ सही है तो फिर ऐसे निशानों से अमन ही उठ जाएगा। कल को कह दिया जाएगा कि ख़ुसरो परवेज़ को मआज़ल्लाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि ने क़त्ल करा दिया होगा। ऐसे ऐतराज़ सच देखने वालों और सच पहचानने वाले लोगों का कार्य नहीं है।

मैं अन्त में पुन: कहता हूं कि मेरे निशान कम नहीं। एक लाख से अधिक लोग मेरे निशानों पर गवाह हैं और जीवित हैं। मेरे इन्कार में जल्दी न करो अन्यथा मृत्योपरांत क्या उत्तर दोगे? **निस्सन्देह स्मरण रखो कि ख़ुदा तआला सर पर है और वह सच्चे को सच्चा ठहराता है और झूठे को झूठा।**

(लेक्चर लुधियाना पृष्ठ 62-70 हिन्दी)

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

शादी ब्याह और रिश्तों के बारे में ज़रूरी बातें

अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने दीन और शरीअत (इस्लाम और क़ुरआन) को फिर से ज़िन्दा और लागू करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पैदा किया है। आप ने रिश्ते-नातों के बारे में जो आदेश दिए और जो इस समय ख़ुलफ़ा किराम की ओर से आदेश दिए जा रहे हैं वे सब हमारे लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त हैं। यदि हम अपने घर और समाज को जन्नत समान बनाना चाहते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम इन स्वर्णिम नसीहतों और आदेशों का पालन करें।

जमाअत में ही रिश्ता करने की नसीहत

जमाअत के लोगों की हमेशा ही यह कोशिश होनी चाहिए कि लड़के और लड़कियों के रिश्ते यथासम्भव अहमदी लोगों में ही हों। इस सम्बन्ध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सन् 1898ई. में एक इश्तिहार जारी करके अपनी जमाअत को यह नसीहत फ़रमायी थी कि वह अहमदी लड़की की शादी ग़ैर अहमदियों में न करें। एक बार एक सहाबी ने अपनी बेटी का रिश्ता अपने एक ग़ैर अहमदी रिश्तेदार से करने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इजाज़त माँगी तो आप बहुत नाराज़ हुए और फ़रमाया :-

"यह बात पूर्णतया हमारे नियम के ख़िलाफ़ है और गुनाह है कि आप अपनी लड़की एक ऐसे व्यक्ति को दें जो कि इस जमाअत में दाख़िल नहीं है।"

फिर फ़रमाया:-

"यही आपके लिए आज़माइश का समय है। दीन को दुनिया पर प्रधानता देनी चाहिए। सहाबा ने दीन के लिए बापों और बेटों को क़त्ल कर दिया था। क्या तुम दीन के लिए एक बहन को नाराज़ भी नहीं कर सकते.... अत: यह अटल फैसला है कि जो लड़का अहमदी न हो उसको लड़की देना गुनाह है।"

(मक्तूबात हज़रत मसीह मौऊद बनाम फ़ज़्लुर्रहमान साहिब अज़ क़ादियान 17-04-1907)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"यह तो स्पष्ट है कि जो लोग मुख़ालिफ़ मौलवियों के अधीन होकर ईर्ष्या-द्वेष और दुश्मनी में हद से गुज़र गए हैं उनसे हमारी जमाअत के अब नए रिश्ते असम्भव हो गए हैं जब तक कि वे तौबा करके इस जमाअत में दाख़िल न हों। अब यह जमाअत किसी बात में उनकी मोहताज नहीं। धन-दौलत में, पढ़ाई-लिखाई में, शानोशौकत में, ख़ानदान में, परहेज़गारी में, ख़ुदातर्सी में दूसरों से ज़्यादा मर्तबा रखने वाले इस जमाअत में बहुत से मौजूद हैं और हर एक इस्लामी क़ौम के लोग इस जमाअत में पाए जाते हैं। फिर इस दशा में कोई आवश्यकता नहीं कि ऐसे लोगों से हमारी जमाअत नए रिश्ते जोड़े जो हमें काफ़िर कहते हैं और हमारा नाम दज्जाल रखते हैं या ख़ुद तो नहीं कहते मगर ऐसे लोगों की प्रशंसा करते हैं और उनके अनुयायी हैं।

स्मरण रहे कि जो व्यक्ति ऐसे लोगों को छोड़ नहीं सकता वह हमारी जमाअत में दाख़िल होने योग्य नहीं, जब तक पवित्रता और सच्चाई के लिए एक भाई-भाई को नहीं छोड़ेगा और एक बाप-बेटे से दूरी नहीं इख़्तियार करेगा तब तक वह हम में से नहीं।"

(मजमुआ इश्तिहारात जिल्द-3 पृष्ठ 50 मुद्रित लन्दन)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि :-

"यह जमाअत अहमदिया में हर हाल में देखा जाएगा कि लड़की जहाँ रिश्ता कर रही है या रिश्ता करने की इच्छा रखती है वह लड़का बहरहाल अहमदी हो। क्योंकि इन समस्त बातों का उद्देश्य पवित्र घर और समाज का निर्माण है और नेक बनना और नेक सन्तान की प्राप्ति है। यदि अहमदी लड़के अहमदी लड़कियों को छोड़कर और अहमदी लड़कियाँ अहमदी लड़कों को छोड़कर दूसरों से शादी करेंगे तो समाज में, ख़ानदान में बिगाड़ पैदा होने का ख़तरा होगा और नई नस्ल के दीन से दूर होने का ख़तरा पैदा हो जाएगा। इसलिए धार्मिक समानता देखना भी उसी तरह आवश्यक है जिस तरह भौतिक। इस स्वतन्त्र समाज में हमारे कुछ लड़कों और लड़कियों का दूसरों से रिश्ते करने की ओर बड़ा रुझान बढ़ रहा है। इस ओर विशेष रूप से बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। जमाअती प्रबन्धन भी बहुत चिन्तित है क्योंकि ऐसी घटनाएँ अब काफ़ी बढ़ने लगी हैं कि अपनी मर्ज़ी से दूसरों में या दूसरे धर्मों में रिश्ते करने लग जाते हैं।" (ख़ुत्बा जुमा 24 दिसम्बर 2004, ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-2 पृष्ठ 931)

"शादी करना एक शुभ कर्म है। अल्लाह तआला ने भी इस ओर ध्यान आकर्षित किया है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी इस ओर ध्यान दिलाया है। बल्कि अल्लाह तआला ने विधवाओं को एक प्रकार का आदेश दिया है कि वे शादी करें और उसके सगे-सम्बन्धी और रिश्तेदार उसके रास्ते में रोक न बनें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी अपने सहाबा को शादी के लिए प्रेरित किया करते थे, रिश्ते भी बताया करते थे। जमाअत के नियमों को अनदेखा करने पर यही शुभ कर्म कभी-कभी कई अहमदी ख़ानदानों के लिए मुसीबत बन जाता है और उसमें निज़ाम-ए-जमाअत का कोई दोष नहीं होता। लेकिन कुछ लोग निज़ाम-ए-जमाअत पर भी दोष मढ़ देते हैं और यह उस समय होता है जब एक आदमी अपनी मर्ज़ी से किसी ग़ैर अज़ जमाअत लड़की या औरत से शादी करता है और इस डर से कि निज़ाम-ए-जमाअत को बुरा लगेगा और मुझे अनुमति नहीं मिलेगी या कभी-कभी ग़ैर अज़ जमाअत लड़की वालों की ओर से भी यह शर्त रख दी जाती है कि निकाह ग़ैर अज़ जमाअत मौलवी या व्यक्ति पढ़ाए तो ऐसे लोग ग़ैर अज़ जमाअत से निकाह पढ़वा लेते हैं और एक ऐसी ग़लती कर बैठते हैं जो उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत से बाहर निकाल देती है। क्योंकि यह निकाह पढ़ाने वाले वे व्यक्ति होते हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को झुठलाते हैं और आप पर कुफ्र के फ़त्वे देने वाले होते हैं। मानो ऐसा अहमदी लड़का या लड़की या उसका ख़ानदान जो उस शादी में उसका मददगार होता है व्यवहारिक तौर पर यह ऐलान करता है कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत से बाहर निकलकर और ग़ैर अहमदी मौलवी से यह निकाह पढ़वाकर नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम को झूठा और काफ़िर कहता हूँ।"

"अत: हर अहमदी को अपने इस वादे की ओर हमेशा ध्यान देना चाहिए कि दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दूँगा। जहाँ यह एहसास पैदा हो कि मेरे किसी काम के कारण मेरा धर्म प्रभावित हो रहा है वहाँ एक सच्चे अहमदी को सारी सांसारिक इच्छाओं और कार्यों को छोड़ देना चाहिए। यदि हर अहमदी इसको जान ले और इस पर चलना शुरू कर दे तो अवश्य ख़ुदा के प्यार की नज़र पाने वाले होंगे और इस ज़माने के इब्राहीम के साथ सच्चा सम्बन्ध जोड़ने वाले होंगे और सच्चा अनुसरण और अनुपालन करने वाले होंगे। संक्षिप्तत: मैं यह भी बता दूँ कि जब सज़ा के मामलात मेरे सामने आते हैं तो सैद्धान्तिक रूप से सज़ा देनी पड़ती है। लेकिन जब मैं किसी को सज़ा देता हूँ तो यह बात मेरे लिए बहुत कष्टदायक होती है।"

(ख़ुत्बा जुमा 04 जुलाई सन् 2008 ई. ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-6 पृष्ठ 267)

यही कारण है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ा किराम ने रिश्तों के विषय में हमेशा ही दीन को प्राथमिकता देने की हिदायत फ़रमायी है। यह बात ठीक है कि मजबूरी के कारण ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की इजाज़त से ग़ैर अहमदी लड़की से रिश्ता हो सकता है और अहमदी निकाहख़्वान के निकाह पढ़ाने से यह रिश्ता हो भी जाता है। लेकिन ऐसे रिश्तों को फिर भी बच्चों की तरबियत के लिहाज़ से बेहतर नहीं कहा जा सकता और जहां तक ग़ैर अहमदी या ग़ैर मुस्लिम लड़के से शादी करने का सम्बन्ध है तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो स्पष्ट रूप से मना फ़रमाया है। अत: यदि कोई अहमदी लड़की या माँ-बाप ऐसा करते हैं तो वे नाराज़गी के पात्र बनते हैं।

नए बैअत करने वाले लड़के और लड़की से सम्बन्धित कुछ हिदायतें

★यदि कोई लड़का बैअत करके जमाअत में दाख़िल होता है तो उसके लिए कम से कम एक साल की अवधि मुक़र्रर की गई है कि उसे आज़माया जाए।

आदेश हुज़ूर अनवर यह है कि :-

"अगर कोई लड़की बैअत करके अहमदी होती है और उसकी किसी अहमदी लड़के से शादी का कोई मामला हो तो उसके लिए आज़माइश की कोई अवधि निर्धारित नहीं। ऐसा हर मामला स्थानीय सम्बन्धित सदर/अमीर जमाअत, इन्चार्ज रिश्ता-नाता और सम्बन्धित नाज़िर इस्लाह व इर्शाद/नाज़िम इर्शाद वक़्फ़-ए-जदीद की रिपोर्ट व सिफ़ारिश के साथ मार्गदर्शन हेतु यहाँ भिजवाया जाएगा। उसके बाद इस प्रकार के सारे मामलात में निकाह की अनुमति देना या न देना ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का शुभचिन्तित अधिकार होगा।"

(wtt- 5266/18.09.2017)

सैयदना हुज़ूर अनवर ने रिश्ता-नाता कमेटी कनाडा से मीटिंग के दौरान फ़रमाया :-

"किसी अहमदी लड़की को जमाअत से बाहर किसी ग़ैर अहमदी या ग़ैर मुस्लिम लड़के से शादी करने की इजाज़त नहीं है।"

फिर फ़रमाया :-

"जो लड़के जमाअत से बाहर शादी करते हैं तो उनका इख़राज (निष्कासन) इसलिए होता है कि

उन्होंने किसी ग़ैर अहमदी मौलवी या क़ाज़ी से निकाह पढ़ाया होता है।"

"जो व्यक्ति किसी ग़ैर अहमदी लड़की से शादी विधिवत् इजाज़त लेकर करता है और उसका निकाह अहमदी पढ़ाता है तो उसकी विशेष परिस्थितियों में आज्ञा दे दी जाती है।"

(अलफ़ज़्ल इन्टरनेशनल 28 सितम्बर सन् 2012, 04 अक्टूबर 2012)

काउन्सिलिंग

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का आदेश है कि रिश्ता तय करने से पहले लड़की-लड़का और उनके माता-पिता की काउन्सिलिंग आवश्यक है।

सैयदना हुज़ूरे अनवर ने रिश्ता-नाता कमेटी कनाडा से मीटिंग के दौरान फ़रमाया :-

"माता-पिता की काउन्सिलिंग की आवश्यकता है, माँ-बाप को अलग बुलाएँ और उनकी भी काउन्सिलिंग करें।"

फिर फ़रमाया :-

"कई माएँ पढ़ी लिखी होती हैं और कई अनपढ़। दोनों की विचारधाराएँ अलग-अलग होती हैं। उनकी सोच और विचारधाराओं के अनुसार उनकी काउन्सिलिंग होनी चाहिए।"

"काउन्सिलिंग के दौरान यह समझाएँ कि शादी का क्या उद्देश्य है? इस बारे में दीनी तालीम क्या है और तुम्हारी सोच क्या है। यह बताएँ कि तुम कहाँ से आए हो, किस ख़ानदान से तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम्हारे बड़ों ने क्या क़ुर्बानियाँ दीं और फिर ख़ुदा ने किस तरह अपने फ़ज़्लों से नवाज़ा है। अब दुनियादारी पर न जाओ। अल्लाह के फ़ज़्लों और इनामों का शुकराना यही होना चाहिए कि दीन पर रहो और अपने ख़ानदान की नेकियों और तक़्वा पर रहो और ख़ानदान का वक़ार क़ायम रखो।"

सैयदना हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि :-

"असल चीज़ नेकी है, तक़्वा है और यह होना चाहिए।"

काउन्सिलिंग से सम्बन्धित सैयदना हुज़ूरे अनवर के आदेशों पर आधारित पुस्तिका प्रकाशित हो चुकी है और विभिन्न भाषाओं में उसके अनुवाद करवाए जा चुके हैं। नज़ारत इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया से यह पुस्तिका प्राप्त की जा सकती है।

अन्य आवश्यक विषय

शादी के मौक़ा पर रस्मोरिवाज से परहेज़

आजकल ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर अहमदियों में शादी ब्याह के अवसर पर बहुत सी रस्में रिवाज पा चुकी हैं और सारा समाज इनमें बुरी तरह फँस चुका है। अधिकतर ग़ैर अहमदी लोग उन रस्मों को अदा करते हैं जिनका इस्लामी शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं पर लोगों की देखा देखी वे उसे अदा करने पर मज़बूर हैं। हम अहमदियों को इन समस्त रस्मों से बचना लाज़मी तथा अनिवार्य है।

हम अहमदियों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ा किराम का बहुत एहसान है कि उन्होंने हमें इस्लाम की सच्ची शिक्षा से अवगत कराया और उन समस्त कुरीतियों से जो समाज में मज़बूती

से फैल चुकी हैं बचने की नसीहत फरमायी। यदि आज हम इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को अपनाकर इन कुरीतियों से नहीं बचेंगे तो मुश्किलों में फँसते चले जाएँगे।

इसलिए आज हर अहमदी का कर्तव्य है कि वह शादी ब्याह के मौक़े पर होने वाली हर एक कुरीति से बचे और अपने आस-पड़ोस से भी उसे दूर करने की कोशिश करे जैसे कि :-

(1) मेंहदी की रस्म

(2) शादी ब्याह के मौक़े पर नाचने-गाने वालों को बुलाना

(3) दावत पर अनावश्यक ख़र्च करना

(4) दहेज और बरी की नुमाइश करना

(5) पर्दा इत्यादि का सही प्रबन्ध न करना

(6) ग़ैर मेहरम औरतों की फोटोग्राफी और वीडियो इत्यादि बनाना।

मेंहदी की रस्म

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला फ़रमाते है :-

"मेंहदी की एक रस्म है उसको भी शादी जितनी अहमियत दी जाने लगी है, इस पर दावतें होती हैं, कार्ड छपवाए जाते हैं, स्टेज सजाए जाते हैं। केवल यही नहीं बल्कि कई दिन दावतों का सिलसिला जारी रहता है और शादी से पहले ही जारी हो जाता है, कभी-कभी कई हफ्ते पहले जारी हो जाता है और हर दिन नया स्टेज भी सज रहा होता है..... यह सब कुरीतियाँ हैं जिन्होंने ग़रीब से ग़रीब लोगों को भी अपनी चपेट में ले लिया है..... अब कई अहमदी घरानों में भी इन कुरीतियों को बढ़ चढ़कर किया जा रहा है..... अब मैं खुलकर कह रहा हूँ कि इन कुरीतियों के पीछे न चलें और इसे बन्द कर दें।"

(ख़ुत्बा जुमा 15 जनवरी सन् 2010 ई.)

शादी के अवसर पर नाचने-गाने वालों को बुलाना

"कभी-कभी हमारे देशों में शादी ब्याह के अवसर पर ऐसे गन्दे और भोंड़े गाने लगा देते हैं कि उनको सुनकर शर्म आती है। ऐसे नीच और अश्लील शब्द प्रयोग किए जाते हैं कि मालूम नहीं लोग सुनते किस तरह हैं..... फिर डांस है, नाच है, लड़की की जो रौनक़ें लगती हैं उसमें या शादी के बाद जब लड़की ब्याह कर लड़के के घर जाती है वहाँ कई बार अश्लील म्यूजिक या गानों की धुन पर नाच रहे होते हैं और उसमें रिश्तेदार भी शामिल हो जाते हैं। इसकी किसी भी आस्था में आज्ञा नहीं दी जा सकती है।" (ख़ुत्बा जुमा 25 नवम्बर सन् 2005)

क़ौमियत (जाति)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है :-

"हमारी क़ौम (मुसलमानों) में यह भी एक कुरीति है कि दूसरी क़ौम को लड़की देना पसन्द नहीं करते बल्कि यथासम्भव लेना भी पसन्द नहीं करते। यह खुला-खुला अहंकार और घमण्ड है जो खुला-खुला शरीअत के आदेशों के विपरीत है। इन्सान सब ख़ुदा तआला के बन्दे हैं। रिश्ता-नाता में यह देखना

चाहिए कि जिससे निकाह करना है वह सुशील और सुस्वभाव है या नहीं और किसी ऐसी आफ़त में ग्रस्त तो नहीं जो फ़ित्ने का कारण हो और याद रखना चाहिए कि इस्लाम में जातियों की कोई अहमियत नहीं। केवल संयम (तक़्वा) और सुस्वभाव का महत्व है। अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

اِنَّ اَکۡرَمَکُمۡ عِنۡدَ اللّٰہِ اَتۡقٰکُمۡ (अल हुजुरात आयत 14)

अर्थात तुम में से ख़ुदा तआला के निकट सबसे बढ़ कर सदाचारी वही है जो ज़्यादा परहेज़गार है।"

(ख़ुत्बा जुमा 15 जनवरी सन् 2010 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस आदेश से स्पष्ट होता है कि रिश्ता करते समय जात-पात के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। बल्कि हमेशा तक़्वा देखना चाहिए।

स्वभाव और सुन्दरता

सैयदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला अपने ख़ुत्बा जुमा 24 दिसम्बर सन् 2004 ई० पेरिस, फ्रांस में फ़रमाते है :-

"यह शिकायतें अब बहुत अधिक होने लग गई हैं कि बच्ची नेक है, शरीफ़ है, अख़्लाक़मन्द है, पढ़ी-लिखी है, जमाअती कामों में हिस्सा भी लेती है, लेकिन थोड़ी सुन्दर कम है या क़द उसके देखने वालों के स्तर के मुताबिक़ नहीं है। तो लोग आते हैं, देखते हैं और चले जाते हैं।

इस बारे में मैं पहले भी एक बार ध्यान दिला चुका हूँ कि शक्ल और क़द काठी का तो फोटो और मालूमात से भी पता लग सकता है। फिर घर जाकर लड़कियों को देखना और उनको तंग करने की क्या ज़रूरत है। इसलिए यह अल्लाह तआला का आदेश है कि इन चीज़ों को न देखो बल्कि दीनदारी (सुस्वभाव) को देखो। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि अगर अपनी नस्लों को सँभालना है तो दीनदारी (सुस्वभाव) देखा करो। अगर बच्चियों की दीनदारी (सुस्वभाव) देखेंगे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुआओं के वारिस भी बनेंगे और अपनी नस्ल को भी दीन पर चलता हुआ देखने वाले होंगे।

कुछ लोग तो रिश्ते के समय लड़कियों को इस तरह टटोल कर देख रहे होते हैं जैसे कि क़ुर्बानी के बकरे को टटोला जाता है। शादी तो एक मुआहदा है और दोनों पक्षों की एक-दूसरे के प्रति क़ुर्बानी का नाम है, एक पवित्र बन्धन है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया तो ज़िन्दगी का सामान है और नेक औरत से बढ़कर ज़िन्दगी का दूसरा कोई सामान नहीं।" (इब्नि माजा-अब्वाबुन्निकाह बाब अफ़ज़लुन्निसा)

इसलिए उन लोगों को जो हर चीज़ को दुनिया के पैमाने से नापते हैं यह हदीस याद रखनी चाहिए कि नेक औरत से बढ़कर तुम्हारे लिए ज़िन्दगी का दूसरा कोई दुनियावी सामान नहीं है। नेक औरत तुम्हारे घर को सँभालकर रखेगी और तुम्हारी सन्तान को भी सुन्दर शिक्षा और संस्कार सिखाएगी। जिसके परिणामस्वरूप तुम दीन और दुनिया (लोक परलोक) की भलाइयाँ पाने वाले होगे।

(रिश्ता-नाता व शादी-ब्याह से सम्बन्धित आवश्यक निर्देश)

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

अरबईन नम्बर-4

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य

जल्दबाज़ आलोचकों के लिए संक्षिप्त लेख और बराहीन अहमदिया की चर्चा

...हे धोखेबाज़ ! ख़ुदा तुझ से हिसाब ले। तूने मेरी शर्त का क्या स्वीकार किया जबकि तेरी ओर से मन्क़ूली बहस पर बैअत का आधार हो गया जिसे मैं प्रकाशित संकल्प के कारण किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकता था तो मेरा निमन्त्रण क्या स्वीकार किया गया ? और बैअत के पश्चात् उस पर अमल करने का कौन सा अवसर रह गया। क्या यह कपट इस प्रकार का है कि लोगों की समझ में नहीं आ सकता था। नि:सन्देह समझ में आया परन्तु जानबूझ कर सच्चाई का ख़ून कर दिया। अत: इन लोगों का यह ईमान है। इतना अन्याय करके फिर अपने विज्ञापनों में हज़ारों गालियां देते हैं जैसे मरना नहीं और कैसी प्रसन्नता से कहते हैं कि महरअली शाह साहिब लाहौर में आए उन से मुक़ाबला न किया। जिन हृदयों पर ख़ुदा ला'नत करे मैं उन का क्या उपचार करूँ। मेरा हृदय फ़ैसले के लिए सहानुभुति रखने वाला है। एक युग बीत गया, मेरी यह इच्छा अब तक पूर्ण नहीं हुई कि इन लोगों में से कोई सत्य और ईमानदारी एवं नेक नीयत से फ़ैसला करना चाहे परन्तु खेद कि ये लोग सच्चे हृदय से मैदान में नहीं आते। ख़ुदा फ़ैसले के लिए तैयार है और उस ऊंटनी की तरह जो बच्चा जनने के लिए पूंछ उठाती है। युग स्वयं फ़ैसले की मांग कर रहा है। काश ! इनमें से फ़ैसले का अभिलाषी हो। काश ! इनमें से कोई सन्मार्ग प्राप्त हो। मैं विवेक से निमन्त्रण देता हूँ और ये लोग भ्रम पर भरोसा करके मेरा इन्कार कर रहे हैं। इन की आलोचनाएं भी इसी उद्देश्य से हैं कि किसी स्थान पर हाथ पड़ जाए। हे मूर्ख जाति ! यह सिलसिला आकाश से स्थापित हुआ है। तुम ख़ुदा से मत लड़ो। तुम उसे मिटा नहीं सकते। उस का सदैव बोल-बाला रहा है, तुम्हारे हाथ में क्या है कुछ हदीसों के अतिरिक्त जो तिहत्तर फ़िर्क़ों ने बोटी-बोटी करके आपस में बांट रखी है। सत्य और विश्वास का देखना कहाँ है? तथा एक दूसरे को झूठा ठहराने वाले हो। क्या आवश्यक न था कि ख़ुदा का हकम अर्थात् फ़ैसला करने वाला तुम में उतर कर तुम्हारी हदीसों को ढेर में से कुछ लेता और कुछ रद्द कर देता। अत: यही इस समय हुआ। वह व्यक्ति हकम किस बात का है कि तुम्हारी सब बातें मानता जाए और कोई बात रद्द न करे। स्वयं पर अन्याय न करो तथा इस सिलसिले को महत्वहीन न समझो जो ख़ुदा की ओर से तुम्हारे सुधार के लिए पैदा हुआ। निश्चय समझो कि यदि यह कार्य मनुष्य का होता और उसके साथ कोई गुप्त हाथ न होता तो यह सिलसिला कब का तबाह हो जाता और ऐसा झूठ बांधने वाला इतनी जल्दी तबाह हो जाता कि अब उसकी हड्डियों का भी पता न मिलता। अत: अपने विरोध के कारोबार में दोबारा विचार करो। कम से कम यह तो सोचो कि कदाचित ग़लती हो गई हो और शायद यह लड़ाई तुम्हारी ख़ुदा से हो। मुझ पर क्यों यह आरोप लगाते हो कि बराहीन अहमदिया

का रुपया खा गया है।[1]★ यदि मुझ पर तुम्हारा कुछ अधिकार है जिस की ईमान के तौर पर तुम पकड़

★मुन्शी इलाही बख़्श साहिब ने झूठे आरोपों और घटना के विपरीत अपवित्रता से अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा को ऐसा भर दिया जैसा कि एक गन्दी नाली के गन्दे कीचड़ से भरी जाती है या जैसा कि सन्डास या मल से, तथा ख़ुदा से निर्भय हो कर मेरे सम्मान पर झूठ के तौर पर क्रूर शत्रुओं के समान आक्रमण किया है। वे निश्चय ही समझ लें कि उन्होंने यह कार्य अच्छा नहीं किया और जो कुछ उन्होंने लिखा है उन गालियों से अधिक नहीं जो हज़रत मूसा को दी गई और हज़रत मसीह को दी गईं और हमारे नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को दी गईं। खेद उन्होंने आयत وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ (अलहुमज़ा : 2) के لَا تَقۡفُ مَا لَيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ (बनी इस्राईल : 37) के वादे से कुछ भी भय नहीं किया और न उन्होंने आयत ---- की कुछ परवाह नहीं की। वे बार-बार मेरे बारे में लिखते हैं कि मैंने उनको सांत्वना दे दी कि मैं आप के झूठ घड़ने के कारण किसी मानव अदालत में आप पर नालिश नहीं करूंगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि मैं न केवल मानव अदालत में नालिश नहीं करूँगा अपितु मैं ख़ुदा की अदालत में भी नालिश नहीं करता परन्तु चूंकि मुझ पर केवल झूठे लज्जनीय आरोप लगाए हैं और मुझे न किए पाप का कष्ट पहुंचाया है। इसलिए मैं कदापि विश्वास नहीं रखता कि मैं उस समय से पूर्व मरूँ जब तक कि मेरा शक्तिमान ख़ुदा इन झूठे आरोपों से मुझे मुक्त करके आप का झूठा होना सिद्ध न करे। - इसी के सम्बन्ध में मुझे निश्चित और ठोस तौर पर 6 दिसम्बर सन् 1900 ई. जुमेरात के दिन यह इल्हाम हुआ- बर मकान फ़लक शुदा या रब। गर उम्मीदे दहम मदार अजब। मैं नहीं जानता कि ग्यारह दिन हैं या ग्यारह सप्ताह या ग्यारह महीने या ग्यारह वर्ष परन्तु एक निशान मेरे निर्दोष होने के लिए इस अवधि में प्रकट होगा कि आप को अत्यन्त लज्जित करेगा। ख़ुदा के कलाम पर न हंसो, पर्वत टल जाते हैं, सागर सूख सकते हैं, मौसम बदल जाते हैं परन्तु ख़ुदा का कलाम नहीं बदलता जब तक पूरा न हो ले। इन्कारी कहता है कि अमुक भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। हे कठोर हृदय ख़ुदा से शर्म कर। वे समस्त भविष्यवाणियां पूरी हो गईं और यह युग नहीं गुज़रेगा जब तक शेष भाग पूर्ण न हो जाए। अब तक सौ से अधिक भविष्यवाणियां संसार ने देख लीं। शर्म को

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

कर सकते हो या अब तक मैंने तुम्हारा कोई क़र्ज़ा अदा नहीं किया या तुम ने अपना हक़ मांगा और मेरी ओर से इन्कार हुआ तो प्रमाण प्रस्तुत करके वह मांग मुझ से करो। उदाहरणतया यदि मैंने बराहीन अहमदिया के मूल्य का रुपया तुम से वुसूल किया है तो तुम्हें ख़ुदा तआला की क़सम है जिसके सामने उपस्थित किए जाओगे कि बराहीन अहमदिया के वे चारों भाग मेरे सुपुर्द करो और अपना रुपया ले लो। देखो मैं खोलकर यह विज्ञापन देता हूँ कि अब इसके पश्चात् यदि तुम बराहीन अहमदिया के मूल्य की मांग करो और चारों भाग बतौर मेरे किसी मित्र को दिखा कर मेरी ओर भेज दो और मैं उन चारों भागों को लेने के पश्चात् उनका मूल्य अदा न करूँ तो मुझ पर ख़ुदा की ला'नत हो और यदि तुम आरोप से न रुको और न किताब को वापस करके अपना मूल्य लो तो फिर तुम पर ख़ुदा की ला'नत हो। इसी प्रकार प्रत्येक हक़ जो मुझ पर हो प्रमाण देने के पश्चात् मुझ से लो। अब बताओ इस से अधिक मैं क्या कह सकता हूँ कि यदि कोई हक़ की मांग करने वाला यों नहीं उठता तो मैं ला'नत के साथ उसको उठाता हूँ और मैं प्रथम उस से बराहीन अहमदिया के मूल्य के बारे में मैं तीन विज्ञापन प्रकाशित कर चुका हूँ जिन का यह विषय था कि मैं मूल्य देने को तैयार हूँ। चाहिए कि मेरी पुस्तक के चारों भाग वापस करें तथा जिन थोड़े से रुपयों के लिए मर रहे हैं वह मुझ से वुसूल करें।

सलामती हो उस पर जिसने मार्ग दर्शन का अनुसरण किया।

विज्ञापनदाता-मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी 15 दिसम्बर सन् 1900 ई.

इस्लाम के लिए एक अध्यात्मिक मुक़ाबले की आवश्यकता

हे दर्शकों ! न्याय और ईमान की दृष्टि से विचार करो कि आजकल इस्लाम कैसी अवनति की अवस्था में है और जिस प्रकार एक बच्चा भेड़िए के मुख में एक ख़तरनाक स्थिति में होता है यही स्थिति इन दिनों इस्लाम की है और इस समय वह आपदाओं से गुज़र रहा है। (1) एक तो आन्तरिक-- मतभेद और आपस में एकता का अभाव चरमसीमा तक पहुँच गया है तथा एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाए पर दांत पीस रहा है।

(2) दूसरे बाह्य आक्रमण झूठे तर्कों के रूप में इतनी अधिकता के साथ हो रहे हैं कि जब से आदम पैदा हुआ या यों कहो कि जब से नुबुव्वत की नींव पड़ी है उन आक्रमणों का उदाहरण संसार में नहीं पाया जाता। इस्लाम वह धर्म था जिसमें एक व्यक्ति के मुर्तद हो जाने से इस्लाम की जाति में प्रलय का दृश्य उपस्थित हो जाता था तथा असंभव समझा गया था कि कोई व्यक्ति इस्लाम की मधुरता का स्वाद लेकर फिर मुर्तद हो जाए। अब इसी देश ब्रिटिश इण्डिया में हज़ारों मुर्तद पाओगे अपितु ऐसे भी जिन्होंने इस्लाम का अपमान तथा रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को गालियां देने

क्यों त्यागते और न्याय को छोड़ते हो। इसी से

में कोई कमी नहीं छोड़ी। फिर आजकल इसके अतिरिक्त यह आपदा खड़ी हो गई है कि जब सदी के ठीक सर पर ख़ुदा तआला ने नवीनीकरण (तजदीदे दीन)[2]★ और सुधार के लिए तथा आवश्यक सेवाओं के यथायोग्य एक बन्दा भेजा और उसका नाम मसीह मौऊद रखा। यह ख़ुदा का काम थी जो ठीक आवश्यकता के दिनों में प्रकट हुआ तथा आकाश ने उस पर साक्ष्य दी और बहुत से निशान प्रकट हुए परन्तु तब भी अधिकांश मुसलमानों ने उसे स्वीकार न किया अपितु उसका नाम काफ़िर और दज्जाल, बेईमान, धोखेबाज़ रुपए-पैसे में ख़ुर्द-बुर्द करने वाला, झूठा वचन भंग करने वाला, धन खा

★ इस हदीस को अहले सुन्नत के समस्त बड़े उलेमा मानते चले आए हैं कि प्रत्येक सदी के सर पर मुजद्दिद पैदा होगा परन्तु मुजद्दिद के नाम पर जो प्रस्तुत करते हैं यह व्याख्या और निर्धारण वह्यी की दृष्टि से नहीं केवल अपने विवेक द्वारा निकाला हुआ विचार और निशान जो ख़ुदा तआला ने मेरे हाथ पर प्रकट किए वे सौ से भी अधिक हैं जो किताब तिरयाक़ुल क़ुलूब में लिखे गए हैं परन्तु खेद कि हमारे विरोधी उन पहले इन्कार करने वालों के समान बन गए हैं जो बार-बार हुदैबिया के बारे में भविष्यवाणी को प्रस्तुत करते हैं या उन यहूदियों के समान जो हज़रत मसीह के झुठलाने के लिए अब तक ये उनकी भविष्यवाणियां प्रस्तुत करते हैं कि उन्होंने कहा था कि मैं दाऊद का तख़्त स्थापित करूँगा तथा यह भविष्यवाणी की थी कि अभी कुछ लोग जीवित होंगे जब मैं वापस आऊंगा। इसी प्रकार ये लोग भी उन समस्त भविष्यवाणियों पर दृष्टि नहीं डालते जो एक सौ से भी अधिक पूरी हो चुकी हैं और देश में प्रकाशित हो चुकी हैं और जो एक दो भविष्यवाणी उनकी मूर्खता और ध्यान की कमी के कारण उनकी समझ में नहीं आईं बार-बार उन्हीं का राग अलापते रहते हैं। सोचते नहीं कि यदि इस प्रकार का झुठलाना वैध है तो ऐसी अवस्था में यह आरोप समस्त नबियों पर होगा तथा उनकी भविष्यवाणियों पर ईमान लाने का मार्ग बन्द हो जाएगा। उदाहरणतया जो व्यक्ति आथम की भविष्यवाणी या अहमद बेग़ के दामाद की भविष्यवाणी पर आपत्ति करता है क्या वह हुदैबिया के बारे में भविष्यवाणी को भूल गया है जिस पर विश्वास करके आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने एक बड़ी सेना के साथ मक्का की ओर कूच किया था और क्या यूनुस नबी की भविष्यवाणी चालीस दिन वाली स्मरण नहीं रही। खेद कि मुझे झुठलाने के कारण मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नबी की भविष्यवाणी का भी अच्छा सम्मान किया कि क़ादियान पर प्रकाश उतरा और वह प्रकाश मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद है जिससे मेरी सन्तान वंचित रह गई (सन्तान में मुरीद भी शामिल हैं) और फिर जिस अवस्था में मृत्यु की भविष्यवाणियां एक नहीं चार हैं। (1) आथम के बारे में (2) लेखराम के बारे में (3) अहमद बेग़ के बारे में (4) अहमद बेग़ के दामाद के बारे में। चार में से तीन की मृत्यु हो चुकी, एक शेष है जिसके बारे में सशर्त भविष्यवाणी है। जैसा कि आथम की सशर्त भविष्यवाणी थी। अब बार-बार शोर मचाना कि यह चौथी भी क्यों शीघ्र पूरी नहीं होती। इस कारण समस्त भविष्यवाणियों को झूठा कहना क्या उन लोगों का कार्य है जो ख़ुदा से डरते हैं ? एक सभा उदाहरणतया बटाला में आयोजित करो फिर शैतानी भावनाओं से दूर होकर मेरा भाषण सुनो फिर यदि सिद्ध हो कि मेरी सौ भविष्यवाणियों में से एक भी झूठी निकली हो तो मैं इक़रार करूँगा कि मैं झूठा हूँ और यदि यों ही ख़ुदा से लड़ना है तो धैर्य करो और अपना परिणाम देखो। (इसी से।)

जाने वाला, अत्याचारी, लोगों के अधिकारों को दबाने वाला, और अंग्रेज़ों की चाटुकारिता करन वाला रखा और उसके साथ जो चाहा व्यवहार किया और बहुत से लोगों ने यह बहाना प्रस्तुत किया कि इस व्यक्ति को जो इल्हाम होते हैं वे सब शैतानी हैं या अपने हृदय से झूठ घड़ा है और यह भी कहा कि यह व्यक्ति वास्तव में काफ़िर, दज्जाल, झूठा, बेईमान और नारकी[3]★ है। अत: जिन लोगों को यह

★मुन्शी इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेण्ट जो इल्हाम का दावा करते हैं। अभी एक किताब लिखी है जिसका नाम 'असा-ए-मूसा' रखा है जिसमें सांकेतिक तौर पर मुझे फ़िरऔन कहा गया है। अपनी इस किताब में बहुत से ऐसे इल्हाम प्रस्तुत किए हैं जिनका तात्पर्य यह है कि यह बहुत झूठा है और इसे ख़ुदा की ओर से जानने वाले और उसके दावे की पुष्टि करने वाले गधे हैं। यह इल्हाम भी है कि

ईसा न तवां गश्त बतस्दीक ख़ारे चन्द
सलात बर आंकस कि ईं दर्द बगोयद

इसके उत्तर में क्रियात्मक तौर पर केवल इतना लिखना पर्याप्त है यदि मेरी पष्टि करने वाले लोग गधे हैं तो मुन्शी साहिब पर बड़ी विपत्ति आएगी क्योंकि उनके उस्ताद और पीर जिन की बैअत से उन्हें बड़ा गर्व है मेरे बारे में गवाही दे गए हैं कि ख़ुदा की ओर से तथा आकाशीय प्रकाश है। यद्यपि उन्होंने इस बारे में अपना एक इल्हाम मुझे भी लिखना था परन्तु ये लोग मेरी साक्ष्य कब स्वीकार करेंगे। इसलिए मैं अब्दुल्लाह साहिब के इस बयान की पुष्टि के लिए वह दो गवाह प्रस्तुत करता हूँ जो मुंशी साहिब के मित्रों में से हैं। (1) एक हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब जो मुन्शी इलाही बख़्श साहिब के मित्र हैं संभव था कि हाफ़िज़ साहिब मुंशी साहिब की मित्रता के कारण इस गवाही से इन्कार करें परन्तु हमें उन से स्वीकार कराने के लिए वह प्रमाण मिल गया है जिससे अब वह क़ाबू में आ गए हैं। यथासमय वह प्रमाण सभा में प्रस्तुत किया जाएगा। (2) इस बारे में गवाह उनके भाई मुंशी मुहम्मद याक़ूब हैं। उनका भी हस्ताक्ष किया हुआ लेख मौजूद है। अब मुंशी इलाही बख़्श साहिब का कर्त्तव्य है कि एक जलसा करके और उन दोनों सज्जनों को जलसे में बुलाकर मेरे सामने या किसी ऐसे व्यक्ति के सामने जिसे मैं अपने स्थान पर नियुक्त करूँ। हाफ़िज़ साहिब या मुंशी याक़ूब साहिब से यह साक्ष्य शपथ लेकर लें और यदि हाफ़िज़ साहिब ने ईमान को अलविदा कहकर इन्कार किया तो उस प्रमाण को देखें जो हमारी ओर से प्रस्तुत होगा और फिर स्वयं ही न्याय करें। इसी पर मुंशी साहिब के समस्त इल्हामों का अनुमान कर लिया जाएगा जब कि उनके पहले इल्हाम ने ही पीर की पगड़ी उतारी और उन का नाम गधा रखा वरन् सब गधों से अधिक क्योंकि वही तो सत्यापनकर्ताओं में सर्वप्रथम हैं तो फिर दूसरों की वास्तविकता स्वयं समझ लो। हाँ वह उत्तर दे सकते हैं कि मेरे इल्हाम ने जैसा कि मेरे पीर पर आक्रमण करके उसे अपमानित किया और इसी प्रकार मेरा सम्मान भी तो उस से सुरक्षित नहीं रहा, क्योंकि वह इल्हाम जो उन्होंने अपनी किताब 'असा-ए-मूसा' के पृष्ठ 355 में लिखा अर्थात् انی مهین لمن ازاد اهانتك जो लाम के बदले के कारण यहाँ नहव (व्याकरण) के नियमानुसार प्रतिद्वन्द्वी सदस्य को लाभ का अधिकार देता है। इसके अर्थ ये होते हैं कि मैं तेरे विरोधी के समर्थन और सहायता के लिए अपमानित करूँगा और यदि कहो कि इसमें लिपिक की भूल है और वास्तव में

इल्हाम हुआ है वे चार से भी अधिक होंगे। अत: काफ़िर कहलाने के इल्हाम ये हैं और सत्यापन के लिए मेरे वे वार्तालाप एवं सम्बोधन हैं जिनमें कुछ नमूने के तौर पर इस पत्रिका में लिखे गए हैं। इसके अतिरिक्त कुछ दिवंगत लोगों ने मेरे वयस्क होने से भी पूर्व मेरा और मेरे गांव का नाम लेकर मेरे बारे में भविष्यवाणी की है कि वही मसीह मौऊद है और बहुत से लोगों ने वर्णन किया कि नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को हमने स्वप्न में देखा और आप[स.] ने फ़रमाया कि यह व्यक्ति सत्य पर है और हमारी ओर से है। जैसा कि पीर झण्डे वाला सिन्धी ने जिन के शिष्य लाखों से भी कुछ अधिक होंगे अपना यही कश्फ़ अपने मुरीदों (शिष्यों) में प्रचारित किया तथा अन्य सदात्मा लोगों ने भी दो सौ बार से भी अधिक कुछ आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को स्वप्न में देखा और कहा कि रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने स्पष्ट शब्दों में इस विनीत के मसीह मौऊद होने की पुष्टि की तथा हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ नामक एक व्यक्ति ने जो नहर विभाग के ज़िलेदार हैं मुझे सीधे तौर पर यह सूचना दी[4]★ कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी ने स्वप्न में देखा कि क़ादियान पर एक प्रकाश आकाश से गिरा (अर्थात् इस विनीत पर) और कहा कि मेरी औलाद उस प्रकाश से वंचित रह गई। यह हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब का बयान है जिसे मैंने बिना किसी न्यूनाधिता के लिख दिया और झूठों पर ख़ुदा का अभिशाप। इस पर अतिरिक्त तर्क यह है कि यही बयान एक अन्य शैली और अन्य आयोजन के अवसर पर आदरणीय अब्दुल्लाह ग़ज़नवी ने हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब के सगे भाई मुहम्मद याक़ूब साहिब के पास किया और इस बयान में मेरा नाम लेकर कहा कि संसार के सुधार के लिए मुजद्दि आने वाला था वह मेरे विचार में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद है। यह शब्द एक स्वप्न की ताबीर में कहा और यह कि कदाचित[5]* इस प्रकाश से अभिप्राय जो आकाश से उतरते

लाम नहीं है तो इसका उत्तर यह है कि यही इल्हाम उस किताब में कई स्थानों पर लाम के साथ बारम्बार आया है वरन् किताब के आरम्भ में भी और अन्त में भी तथा संभव नहीं कि प्रत्येक स्थान पर लिपिक की भूल हो। अत: ये इल्हाम ख़ूब हैं जो कभी मौलवी अब्दुल्लाह साहिब को जा पकड़ते हैं और कभी स्वयं मुल्हम साहिब को अपमान का वादा देते हैं। इसी से।

★हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब ज़िलेदार नहर ने बहुत से लोगों के पास मौलवी अब्दुल्लाह साहिब के इस कश्फ़ का वर्णन किया था। ऐसे प्रमाण प्राप्त हो गए हैं कि अब हाफ़िज़ साहिब में पलायन की शक्ति नहीं। हाफ़िज़ साहिब की आयु का अब अन्तिम चरण है अब उनकी ईमानदारी और संयम को परखने के लिए लम्बे समय के पश्चात् यह अवसर प्राप्त हुआ है। (इसी से)

* स्मरण रहे कि मुन्शी मुहम्मद याक़ूब साहिब के हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब के सगे भाई ने अमृतसर में मुबाहले के आयोजन अब्दुल हक़ ग़ज़नवी, मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी का यह बयान लोगों को सुनाया था। वहाँ चार सौ के लगभग लोग रहे होंगे। उस समय उन्होंने शायद का शब्द प्रयोग नहीं किया था अपितु रो-रो कर उसी अवस्था में कि उनका मुंह आंसुओं से भीगा हुआ था निश्चित और ठोस शब्दों में वर्णन किया था कि मौलवी

देखा गया मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद है। ये दोनों लोग जीवित मौजूद हैं और दूसरे सज्जन का हस्तलिखित लेख मेरे पास मौजूद है। अब बताओ कि एक सदस्य तो मुझे काफ़िर कहता है और दज्जाल नाम रखता है तथा अपने विरोधी इल्हाम सुनाता है जिनमें से मुन्शी इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेण्ट हैं जो मौलवी अब्दुल्लाह साहिब के शिष्य हैं तथा दूसरा सदस्य मुझे आकाश का प्रकाश समझता है तथा इस बारे में अपने कश्फ़ प्रकट करता है जैसा कि मुन्शी इलाही बख़्श साहिब का पीर मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी और पीर ज्ञानवान हैं। अब कितने अंधकार की बात है कि पीर ख़ुदा से इल्हाम पा कर मेरा सत्यापन करता है और मुरीद मुझे काफ़िर ठहराता है। क्या यह बहुत बड़ा उपद्रव नहीं है? क्या आवश्यक नहीं कि इस उपद्रव को किसी उपाय से मध्य से समाप्त किया जाए? और वह उपाय तचयह है कि प्रथम हम उस बुज़ुर्ग को सम्बोधित करतो हैं जिसने अपने बुज़ुर्ग पीर का विरोध कयी है अर्थात् मुन्शी इलाही बख़्श साहिब एकाउण्टेन्ट को तथा उनके दो प्रकार से फैसले का मार्ग निर्धारित करते हैं। प्रथम यह कि एक सभा में इन दोनों गवाहों से मेरी उपस्थिति में या मेरे किसी वकील की उपस्थिति में मौलवी अब्दुल्लाह साहिब की रिवायत को पूछ ले और उस्ताद के तसम्मान का ध्यान रखकर उसकी साक्ष्य को स्वीकार करें। तत्पश्चात् अपनी पुस्तक 'असा-ए-मूसा' को उसकी समस्त आलोचनाओं सहित किसी रद्दी में फेंक दें, क्योंकि पीर का विरोधी भाग्यशाली लक्षणों के विपरीत है और अब वह पीर से अवज्ञा धारण करते हैं तथा माता या पिता द्वारा उद्दण्डता के कारण जिन बेटों को बहिष्कृत कर दिया हो उन बेटों के समान मुक़ाबले पर आते हैं तो वह तो मृत्यु पा चुके उनके स्थान पर मुझे सम्बोधित करें तथा किसी आकाशीय ढ़ंग से मेरे साथ फ़ैसला करें, परन्तु प्रथम शर्त यह है कि यदि पीर के मार्गदर्शन से उद्दण्ड हैं तो एक छपा हुआ विज्ञापन प्रसारित करें कि मैं अब्दुल्लाह साहिब के कश्फ़ और इल्हाम को कुछ वस्तु नहीं समझता और अपनी बातों को प्रमुखता देता हूँ। इस ढंग से फ़ैसला हो जाएगा। मैं इस फ़ैसले के लिए उपस्थित हूँ। सही उत्तर दो सप्ताह के अंदर आना चाहिए परन्तु छपा हुआ विज्ञापन हो।

वस्सलातो अला मनित्तबअलहुदा

विनीत- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान

15 दिसम्बर 1900 ई.

शेष...

★ ★ ★

अब्दुल्लाह साहिब ने मेरी पत्नी का स्वप्न सुनकर कहा था कि वह प्रकाश जो स्वप्न में देखा गया कि आकाश से उतरा और संसार को प्रकाशित कर दिया वह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी है। इसी से।

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store
All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक
WASIMA STONE CRUSHER
Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments
Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

129 वां जलसा सालाना क़ादियान (भारत)

दिनांक 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक **27,28,29 दिसंबर 2024** ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की स्वीकृति प्रदान की है। अहबाब जमाअत अभी से इस जलसा सालाना में सम्मिलित होने की नीयत करके, दुआओं के साथ तैयारी शुरू कर दें। अल्लाह तआला हम सबको ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे इस जलसे से लाभ उठाने का सामर्थ्य प्रदान करे। इस जलसे की कामयाबी और हर प्रकार से बाबरकत होने के लिए इसी प्रकार सईद रूहों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआएं करते रहें। अल्लाह तआला आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

☆ ☆ ☆